Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2020, VOL- 8/41

उच्च शिक्षा पर किए व्यय का विश्लेषणात्मक अध्ययन उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में

विनोद कुमार यादव[1] & प्रोफेसर अरबिंद कुमार झा[2]
[1]शोधार्थी
[2]शोध पर्यवेक्षक, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्विद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

मानव जाति के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों पर विचार करें तो संभवतः मनुष्य के ज्ञान-संग्रह करने और संग्रहित ज्ञान को प्रसारण करने की क्षमताएँ ही हैं, जो मनुष्य बातचीत, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और बड़े-बड़े व्याख्यानों के माध्यम से करता रहा है। इस तरह मनुष्य ने यह जान लिया है कि हमें कार्यों को कुशलतापूर्वक करने के लिए अच्छे प्रशिक्षण, कौशल एवं शिक्षा की आवश्यकता है। हम जानते हैं कि किसी शिक्षित व्यक्ति के श्रम-कौशल, अशिक्षित व्यक्ति से अधिक होते हैं। इसी कारण शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित व्यक्ति की अपेक्षा, अधिक आय का सृजन करता है और आर्थिक समृद्धि में उसका योगदान होता होता है। शिक्षा सिर्फ उपार्जन क्षमता बढ़ाने के लिए नहीं है बल्कि उसके और भी अधिक मूल्यवान लाभ हैं। शिक्षा लोगों को उच्चतम सामाजिक स्थिति और गौरव प्रदान करती है। यह किसी व्यक्ति को अपने जीवन में बेहतर विकल्पों का चयन कर पाने के योग्य बनाती है, व्यक्ति को समाज में चल रहे परिवर्तनों की बेहतर समझ प्रदान कराती है और नव परिवर्तनों को बढ़ावा देती है। देश शिक्षा के अवसरों के विस्तार की आवश्यकता पर बल देते हैं, क्योंकि यह विकास की प्रक्रिया को तेज करती है। जिस प्रकार एक देश अपने भूमि जैसे भौतिक संसाधनों को कारखानों जैसी भौतिक पूंजी में परिवर्तन कर सकता है, उसी प्रकार वह अपने छात्र रूपी

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मानव संसाधनों को भी अभियंता, डॉक्टर एवं शिक्षक जैसी मानव पूंजी में परिवर्तन कर सकता है। समाज को सबसे पहले पर्याप्त मात्रा में मानव पूंजी की आवश्यकता होती है। मानव पूंजी जैसे डॉक्टर, इंजीनियर एवं शिक्षक को तैयार करने के लिए शिक्षकों और प्रशिक्षकों के रूप में बेहतर मानव पूंजी की आवश्यकता होती है। इसका तात्पर्य है कि हमें मानव संसाधनों को मानव पूंजी के रूप में परिवर्तित करने के लिए मानव पूंजी निवेश करने की भी आवश्यकता होती है। मानव पूंजी के निर्माण का संबंध मनुष्य के सर्वांगीण विकास से है जिसे आमतौर पर मानव विकास के रूप में जाना जाता है। शिक्षा में निवेश को मानव पूंजी का एक प्रमुख स्रोत माना जाता है। हमारे माता-पिता या किसी भी व्यक्तियों के द्वारा शिक्षा पर वह कुछ उसी प्रकार का व्यय है जैसा कि कंपनियां निश्चित अवधि में अपने दीर्घकालीन निश्चित लाभ को सुधारने के लिए पूंजीगत वस्तुओं पर व्यय करती हैं। इसी प्रकार व्यक्ति अपने भविष्य की आय बढ़ाने के लिए शिक्षा पर निवेश करता है। मानव पूंजी की अवधारणा और शिक्षा को श्रम की उत्पादकता बढ़ाने का माध्यम मानती है। शिक्षा में किया गया निवेश अनुत्पादक है, यदि उससे वस्तुओं और सेवाओं के निर्गत में वृद्धी न हो। शिक्षा मानव पूंजी निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। हम जानते हैं कि हमारे देश की शासन व्यवस्था संघीय है जिसमें केंद्र, राज्य तथा स्थानीय निकाय हैं। शिक्षा पर वे तीनों ही प्रशासकिय स्तरों पर साथ-साथ वहन किया जाता है। शिक्षा पर व्यय दीर्घकालीन प्रभाव डालते हैं और इन्हें आसानी से बदला नहीं जा सकता है। इसलिए सरकारी हस्तक्षेप अनिवार्य है। भारत में शिक्षा क्षेत्रक के अंतर्गत संघ और राज्य स्तर पर शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद आती है। हमारे जैसे विकासशील देश में जहां जनसंख्या का एक विशाल वर्ग गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहा है। इसमें से कुछ लोग बुनियादी शिक्षा पर व्यय नहीं कर सकते। यही नहीं हमारी अधिकांश जनसंख्या उच्च शिक्षा का भार वहन नहीं कर पाती हैं। जब बुनियादी शिक्षा को नागरिकों का अधिकार मान लिया जाता है, तो यह अनिवार्य है कि सभी सुपात्र नागरिकों को, विशेषकर सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्गों को, सरकार ये यह सुविधाएं निःशुल्क प्रदान करें। शत प्रतिशत साक्षरता और

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारतीयों की औसत उपलब्धियों में वृद्धि के लिए केंद्र तथा राज्य दोनों सरकारें पिछले कई वर्षों से अपने शिक्षा क्षेत्रक पर व्यय में वृद्धि करती आ रही हैं। भारत में केंद्र व राज्य सरकारें शिक्षा हेतु पर्याप्त वित्तीय व्यवस्था का प्रावधान करती आ रही है। शिक्षा समाज के सभी वर्गों को सुनिश्चित रूप से सुलभ कराई जानी चाहिए ताकि आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ समता की प्राप्ति भी हो सके। भारत के पास वैज्ञानिक और तकनीकी जनशक्ति है। समय की मांग है कि गुणात्मकता में सुधार करें तथा इस प्रकार की परिस्थितियों का भी निर्माण करे कि इन्हें अपने ही देश में पर्याप्त रूप से प्रयुक्त किया जा सके।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

वर्तमान की नीव अतीत में होती । हमारे देश, वैदिक काल में जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ वह हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव का पत्थर है। वैदिक शिक्षा प्रणाली के बाद हमारे देश में क्रमशः बौद्ध, मुस्लिम और अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ। वैदिक काल में शिक्षा पर व्यय गुरु का निजी उपार्जित धन, शिष्यों द्वारा लाई गई भिक्षा, गुरु दक्षिणा, दान में मिले पशुओं व भूमि से प्राप्त आय, दान और उपहार थे।

बौद्ध काल में शिक्षा ने संस्थागत रूप ले लिया था और बौद्धकालीन शिक्षा में शिक्षा का वित्तीय प्रबंधन व्यवस्थित तथा स्थाई हो गया था। शिक्षा के लिए आय का साधन लगभग वही थे जो वैदिक काल में थे।

भारत में शिक्षा को सरकार द्वारा प्रथम बार सहायता ब्रिटिश काल में दी गई। ब्रिटिश काल में शिक्षा पर व्यय 1813 ई0 में कंपनी के आज्ञा पत्र में प्रस्तुत की गई। यह प्रतिवर्ष एक लाख व्यय करने की थी। 1833 के आज्ञा पत्र में यह धनराशि बढ़ाकर दस लाख कर दी गई परंतु इनकी प्रगति वुड डिस्पैच 1854 के बाद शुरू हुई। इसके द्वारा सहायता अनुदान प्रणाली के अंतर्गत पहली बार देशी और विदेशी सभी शिक्षण संस्थाओं को बिना धार्मिक भेदभाव के आर्थिक सहायता देने की घोषणा की गई और इस आर्थिक सहायता को विभिन्न मदों-भवन निर्माण, विज्ञान प्रयोगशाला निर्माण, अध्यापकों के वेतन और छात्रवृत्तियों आदि में देने का प्रावधान किया गया।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रारंभ 1857 में कोलकाता, मुंबई व मद्रास विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ होता है। इन विश्वविद्यालयों का वित्त प्रबंधन भी सरकारी सहायता पर निर्भर था। भारत की आजादी के बाद, उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए इसमें सुधार हेतु 1948 में डॉ राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 ने उच्च शिक्षा की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति की पूरी जिम्मेदारी सरकारी निवेश पर डालते हुए कहा कि उच्च शिक्षा निःसंदेह सरकार का दायित्व है, पर सरकारी सहायता को शैक्षिक नीतियों एवं कार्यक्रमों पर सरकारी नियंत्रण नहीं माना जाना चाहिए। शिक्षा आयोग 1964-66 ने भी उच्च शिक्षा की वित्तीय व्यवस्था का भार सरकार पर डाला और कहा कि यदि शिक्षा का विकास और राष्ट्र की प्रगति की जानी है तो उच्च शिक्षा पर अधिक धन व्यय करना होगा। आयोग की सिफारिश है कि हम शिक्षा को सबसे अधिक महत्व दें तथा यथासंभव सकल राष्ट्रीय उत्पाद का अधिकतम भाग शिक्षा के लिए आवंटित करें। 1876 ई0 से शिक्षा की जिम्मेदारी केंद्र एवं राज्य दोनों सरकारों की हो गई है। शिक्षा में मात्रात्मक एवं गुणात्मक पहुंच एवं समानता को बनाए रखना इनकी प्रमुख जिम्मेदारियां हैं। शिक्षा समग्र विकास के लिए सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। शिक्षा का सीधा उत्तरदायित्व अब राज्य सरकारों का भी है इसलिए राज्य सरकार का भी कर्तव्य है कि शिक्षा पर व्यय करें।

समस्या कथन

उच्च शिक्षा पर किये व्यय का विश्लेषणात्मक अध्ययन उत्तर प्रदेश के संदर्भ में।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रतिवर्ष 2010-11 से 2020-21 तक, कुल बजट का शिक्षा पर व्यय तथा शिक्षा पर व्यय का उच्च शिक्षा पर व्यय का अध्ययन।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध परिसीमन

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 2010-11 से 2020- 21 तक उच्च शिक्षा पर व्यय तक सीमित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में प्रवृत्ति विश्लेषण पद्दति का प्रयोग किया गया है। प्रवृत्ति विश्लेषण सर्वे विधि का एक अनुप्रयोग है।

आकड़ो का संकलन एवं विश्लेषण

आंकड़ों का संकलन सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 /संबंधित अधिकारी के माध्यम से प्राप्त किया गया है। तथा संकलित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत के रूप में किया गया है।

उच्च शिक्षा पर व्यय: उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिवर्ष उच्च शिक्षा पर व्यय को सारणी एक मे दर्शाया गया है।

वर्ष	वार्षिक बजट करोड़ रुपए में	शिक्षा पर व्यय करोड़ रुपए में	उच्च शिक्षा पर व्यय करोड़ रुपए में	कुल बजट का शिक्ष पर व्यय प्रतिशत में	कुल शिक्षा पर व्यय का उच्च शिक्षा पर व्यय प्रतिशत में
2010-11	153199.38	22724	11947	14.83	8.57
2011-12	169416.38	27766	2146	16.389	7.73
2012-13	200110.61	34616	2502	17.298	7.23
2013-14	221201.19	32764	2763	14.811	8.43
2014-15	274704.59	37543	2269	13.66	6.04
2015-16	302687.78	43449	2375	14.357	5.47
2016-17	346934.78	49608	2585	14.298	5.21
2017-18	384384.52	62185	2656	16.177	4.27
2018-19	428384.52	63045	2807	14.716	4.45
2019-20	479701.10	68421	2897	14.263	4.23
2020-21	512860.72	71705	3652	13.981	5.09

http://budget.up.nic.in

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

- तालिका एक में प्रदर्शित उच्च शिक्षा पर सरकार द्वारा किए गए व्यय के विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि वर्ष 2013-14 के बाद से उच्च शिक्षा पर व्यय घटा है।
- जिस दर से कुल बजट का शिक्षा पर व्यय में वृद्धि हुई है उस दर से कुल शिक्षा पर व्यय का उच्च शिक्षा पर व्यय में वृद्धि नहीं हुई है बल्कि 3.48 प्रतिशत की कमी कर दी गई।
- वर्ष 2010-11 तथा 2013-14 में उच्च शिक्षा पर व्यय 8 प्रतिशत के ऊपर रहा परंतु उसी वर्ष 2013-14 के बाद से उच्च शिक्षा पर व्यय में कमी होती चली गई।
- सर्वाधिक उच्च शिक्षा पर व्यय वर्ष 2010-11 में 8.57 प्रतिशत रहा और सबसे कम व्यय वर्ष 2017-18 में 4.27 प्रतिशत रहा।
- सर्वाधिक शिक्षा पर व्यय वर्ष 2017-18 में 16 प्रतिशत रहा और इसी वर्ष उच्च शिक्षा पर सबसे कम व्यय किया गया।
- वर्ष 2017-18 से 2019-20 तक शिक्षा पर व्यय एक समान 4 प्रतिशत रहा है और वर्ष 2019-20 के बाद उच्च शिक्षा के व्यय में मामूली 1 प्रतिशत की वृद्धि की गई।

उच्च शिक्षा के संदर्भ में सरकारी दृष्टिकोण में एक बड़ा बदलाव 1997 में आया, जब सरकारी अनुदानों के संदर्भ में विचार करते हुए पहली बार इसे "नान मेरिट गुड" की श्रेणी में रखा गया, जबकि प्राथमिक शिक्षा को "मेरिट गुड" में रखा गया। (जी0ओ0आई0,**1997)**। यही नहीं वित्त मंत्रालय ने "मेरिट गुड" एवं "नान मेरिट गुड" के पहले विभाजन को पूर्ण संशोधित करते हुए उच्च शिक्षा को "मेरिट गुड-**2**" की श्रेणी में डाल दिया इस श्रेणी की वस्तुओं को राज्य द्वारा आर्थिक सहायता की आवश्यकता नहीं होती।(श्रीवास्तव और अमरनाथ, **2001)**।

उच्च शिक्षा के लिए सरकारी अनुदान में कटौती के पीछे तर्क यह दिया जाता है कि इसका सरकारी प्रतिफल कम है, जबकि प्राथमिक शिक्षा का सामाजिक प्रतिफल अधिक है। अर्थात उच्च शिक्षा का लाभ समाज को कम व्यक्ति को अधिक मिलता है। परंतु ज्ञानवान समाज में उच्च शिक्षा की बढ़ती भूमिका को देखते हुए

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

इसकी सरकारी उपेक्षा ठीक नहीं है, क्योंकि प्राथमिक शिक्षा यदि राष्ट्र और समाज की बुनियाद है, तो उच्च शिक्षा उसके आर्थिक एवं तकनीकी प्रगति के लिए आवश्यक है।

संदर्भ

http://budget.up.nic.in
http://koshvani.up.nic.in
rtionline.up.gov.in
www.ncert.nic.in
http://epathshala.nic.in

शाही,राजशरण.*(2013)*उच्च शिक्षा में वित्तीयन की नावप्रवृत्तियाँ एवं समावेशी विकास, *AED Journal of Education Studies Vol.2(2),Aug.2013,P,98-113,ISSN:2250-2327*

लाल, आर0बी0.*(2012)*भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं,आर0 लाल बुक डिपो मेरठ

पुनैया समिति(1993)*:* यू0जी0सी0 फंडिंग ऑफ इंस्टिट्यूशन ऑफ हायर एजुकेशन, यू0जी0सी0, ने दिल्ली।

NCERT(2006) भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास,*NCERT, New Delhi*

Jandnyala B.G.Tilak. (1996). How free Is 'free' primary education in india? Economic and political weekly, 31(6),355-366.

Prakash,S., Chowdhary,S.(1994) Expenditure on education, Theory, Model and Growth,NIEPA,New Delhi.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language